

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ बावन

यहेजकेल की दो लकड़ियों का प्रतीकवाद: भविष्यवाणी और उद्धार की यात्रा

Jeff Pippenger

2024-03-22

हम यहेजकेल के अध्याय सैंतीस की उस रेखा पर विचार कर रहे हैं, जो पहले सातवीं तुरही के बजने और लाओदीकिया को दिए गए संदेश की पहचान कराती है—जिनसे एक लाख चवालीस हज़ार की सेना उत्पन्न होती है। फिर यहेजकेल उस रेखा को दोहराता और उसका विस्तार करता है, जब वह इस्राएल के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों की दो लाठियों के जोड़े जाने को प्रस्तुत करता है, जो उस प्रक्रिया का उदाहरण है जिसके द्वारा सातवीं तुरही के बजने के समय देवत्व और मानवता का संयोग होता है। जब वे दोनों राष्ट्र एक होकर एक ही राष्ट्र बना दिए जाते हैं, तब यहेजकेल दर्शाता है कि उन पर एक राजा है; और तब वह उस अनन्त वाचा का विवेचन करता है—अर्थात् वह वाचा जो एक लाख चवालीस हज़ार के साथ सम्पन्न की जाती है—और इस पर बल देता है कि उन अन्तिम दिनों के वाचा-जन के मध्य परमेश्वर का पवित्रस्थान अनन्तकाल तक रहेगा।

हमने उस रेखा में 1844 में मंदिर को नापने के यूहन्ना के कार्य को जोड़ दिया है, और इस प्रकार उस अंतिम मापन का प्रतिरूप प्रस्तुत किया है जिसका आरम्भ 11 सितंबर, 2001 को हुआ। उस मापन का उल्लेख जकर्याह भी करता है, जो यह बताता है कि यह मापन तब होता है जब परमेश्वर पुनः अपने नाम को रखने के नगर के रूप में यरूशलेम को चुनता है। हम मंदिर का निर्माण करने वाले घटकों और इस्राएल के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के दो डंडों के बीच एक सादृश्य स्थापित कर रहे हैं। एक लाख चवालीस हज़ार की मानवता के साथ अपने देवत्व को एक करने में मसीह का कार्य, उत्तरी और दक्षिणी राज्यों पर आए तितर-बितर किए जाने के पच्चीस सौ बीस वर्षों की दो भविष्यवाणियों में, तथा तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी के साथ संयोजन में, निरूपित है।

सुसमाचार के कार्य में यहेजकेल की छड़ें क्या दर्शाती हैं, यह पहचानने के लिए सुसमाचार की बुनियादी समझ आवश्यक है। मसीह ने वंशानुगत निर्बलता के चार हजार वर्षों के बाद हमारी पतित मानव प्रकृति को स्वीकार किया, जो मरियम के माध्यम से उन तक पहुँची। हमारे आदर्श के रूप में, उन्होंने दिखाया कि अपनी इच्छा को पिता की इच्छा के प्रति समर्पित करके और उसी के अनुसार उसका प्रयोग करके, हम भी वैसे ही विजय पा सकते हैं जैसे उन्होंने पाई—अपनी इच्छा का प्रयोग उनकी इच्छा के अधीन करके। हमारी इच्छा का उपयोग अच्छे या बुरे के लिए हमारे मस्तिष्क में होता है, जो आत्मा का दुर्ग है।

"जो छात्र दो सत्रों का काम एक में समेटना चाहता है, उसे इस विषय में अपनी मनमानी करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। दोगुना काम उठाने का प्रयत्न करना बहुतेरों के लिए मन पर अत्यधिक बोझ डालना और उचित शारीरिक व्यायाम की उपेक्षा करना होता है। यह मान लेना तर्कसंगत नहीं कि मन अत्यधिक मात्रा के मानसिक आहार को ग्रहण और पचा सकता है; जैसे पाचन अंगों पर बोझ लादना—पेट को विश्राम का समय न देना—पाप है, वैसे ही मन को अति-आहार देना भी उतना ही बड़ा पाप है। मस्तिष्क पूरे मनुष्य का दुर्ग है, और खाने, पहनने या सोने की गलत आदतें मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं और विद्यार्थी जिस वस्तु की आकांक्षा करता है—अच्छा मानसिक अनुशासन—उसकी प्राप्ति में बाधा बनती हैं। शरीर का कोई भी भाग, जिसके साथ विचारपूर्वक व्यवहार नहीं किया जाता, अपनी क्षति का संकेत मस्तिष्क को दे देगा। युवाओं को अपना स्वास्थ्य कैसे सुरक्षित रखें, यह सिखाने में बहुत धैर्य और दृढ़ता का प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्हें इस विषय में भली-भांति अवगत कराया जाना चाहिए, ताकि प्रत्येक पेशी और अंग इतने सुदृढ़ और अनुशासित हों कि स्वैच्छिक या अनैच्छिक क्रिया में सर्वोत्तम स्वास्थ्य का परिणाम निकले, और अध्ययन के बोझ को सहन करने के लिए मस्तिष्क सशक्त हो जाए।" ईसाई शिक्षा, 124.

अनन्त वाचा का कार्य यह है कि परमेश्वर की व्यवस्था हमारे हृदय और मन पर लिखी जाए, और हमारा हृदय तथा मन दोनों "हमारी आत्मा का दुर्ग" में स्थित हैं, जो हमारा मस्तिष्क है।

पुरुष या स्त्री का मन एक ही क्षण में शुद्धता और पवित्रता से घोर पतन, भ्रष्टाचार और अपराध की ओर नहीं उतर आता। मानव को दिव्य में रूपांतरित करने में समय लगता है, या परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए लोगों को क्रूर या शैतानी स्तर तक गिराने में भी समय लगता है। जिसे निहारते हैं, वैसा ही बन जाते हैं। यद्यपि वह अपने सृष्टिकर्ता के स्वरूप में रचा गया है, फिर भी मनुष्य अपने मन को इस प्रकार शिक्षित कर सकता है कि जो पाप कभी उसे घृणित लगता था, वही उसे प्रिय लगने लगे। जब वह जागते रहने और प्रार्थना करने से विरत होता है, तो वह किले, अर्थात् हृदय, की रखवाली करना छोड़ देता है, और पाप व अपराध में लग जाता है। मन नीचा पड़ जाता है, और जब उसे इस बात की शिक्षा दी जा रही हो कि वह नैतिक और बौद्धिक शक्तियों को दास बना ले और उन्हें निकृष्ट वासनाओं के अधीन कर दे, तब भ्रष्टता से उसे ऊपर उठाना असंभव हो जाता है। देहधर्मी मन के विरुद्ध निरंतर युद्ध बनाए रखना आवश्यक है; और हमें परमेश्वर के अनुग्रह के परिशोधक प्रभाव से सहायता मिलनी चाहिए, जो मन को ऊपर की ओर आकर्षित करेगा और उसे शुद्ध और पवित्र बातों पर मनन करने की आदत डालेगा। एडवेंटिस्ट होम, 330.

"मन", "हृदय", "मस्तिष्क" "आत्मा का गढ़" है। गढ़ एक ऐसा किला है जिसकी रक्षा पाप के प्रवेश से की जानी चाहिए।

"पिता से की गई अपनी प्रार्थना में, मसीह ने संसार को एक ऐसी शिक्षा दी जो मन और आत्मा पर अंकित होनी चाहिए। 'अनन्त जीवन यह है,' उन्होंने कहा, 'कि वे तुझे, जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं, और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें।' यूहन्ना 17:3। यही सच्ची शिक्षा है। यह शक्ति प्रदान करती है। परमेश्वर और उस यीशु मसीह का, जिसे उसने भेजा है, अनुभवजन्य ज्ञान मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में रूपांतरित कर देता है। यह मनुष्य को अपने ऊपर अधिकार देता है, उसकी निम्न प्रकृति के प्रत्येक आवेग और वासना को मन की उच्च शक्तियों के नियंत्रण के अधीन कर देता है। यह अपने धारक को परमेश्वर का पुत्र और स्वर्ग का उत्तराधिकारी बना देती है। यह उसे अनन्त की बुद्धि के साथ संगति में ले आती है और उसके लिए ब्रह्मांड के समृद्ध भंडार खोल देती है।" Christ's Object Lessons, 114.

"उच्च शक्तियों" का उपयोग "निम्न प्रकृति की उत्तेजनाओं और वासनाओं" को नियंत्रित करने और उन्हें अधीन करने के लिए किया जाना है। उच्च शक्तियाँ मन में स्थित हैं, और "अनन्त के मन के साथ संगति" ही "मनुष्य को परमेश्वर की छवि में रूपांतरित करती है।" एक लाख चवालीस हजार के मुहर लगाने के समय, एक वर्ग में पशु की छवि बनती है और दूसरे वर्ग में मसीह की छवि। जो इस रूपांतरण को संभव करता है, वह मनो का संबंध है। जिनका मन, जैसा कि पौलुस इसे कहता है, "शारीरिक" है, वे देह की—अर्थात् पशु की—छवि गढ़ते हैं। जिन्होंने मसीह का मन प्राप्त कर लिया है, वे मसीह की छवि गढ़ते हैं। वाचा की प्रतिज्ञा यह है कि परिवर्तन के समय हम मसीह का मन प्राप्त कर सकते हैं, यद्यपि हम सब शारीरिक मन के साथ जन्मे थे।

तुम में वही मन हो जो मसीह यीशु में भी था: वह, जो परमेश्वर के स्वरूप में था, उसने परमेश्वर के तुल्य होने को अपने अधिकार से पकड़े रहने योग्य वस्तु न समझा; परन्तु अपने आप को शून्य कर दिया, दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्यों के सदृश बन गया; और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर उसने अपने आप को दीन किया और मृत्यु तक, अर्थात् क्रूस की मृत्यु तक, आज्ञाकारी बना रहा। फिलिप्पियों 2:5-8.

हमारे भीतर भी वही मन होना चाहिए जो मसीह में था, क्योंकि हम उसके स्वरूप में सृजे गए हैं। परन्तु हमारे पास वह मन नहीं; हमारे पास शारीरिक मन है, जो पाप के वश में बिक चुका है।

इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं—जो शरीर के अनुसार नहीं, पर आत्मा के अनुसार चलते हैं—उन पर कोई दंड ठहराव नहीं है। क्योंकि जीवन देने वाले आत्मा की व्यवस्था ने, जो मसीह यीशु में है, मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। क्योंकि जो व्यवस्था शरीर के कारण निर्बल होकर नहीं कर सकी, उसे परमेश्वर ने

किया: उसने अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के विषय में भेजकर, शरीर में पाप को दंडित किया; ताकि व्यवस्था की धार्मिकता हम में पूरी हो, जो शरीर के अनुसार नहीं, पर आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जो लोग शरीर के अनुसार हैं, वे शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; पर जो आत्मा के अनुसार हैं, वे आत्मा की बातों पर। क्योंकि शरीरगत मन मृत्यु है, पर आत्मिक मन जीवन और शांति है। क्योंकि शरीरगत मन परमेश्वर के विरुद्ध वैर रखता है; वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन होता है और न हो सकता है। इसलिए जो शरीर में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। परन्तु तुम शरीर में नहीं, वरन् आत्मा में हो—यदि वास्तव में परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है। और यदि मसीह तुम में है, तो शरीर पाप के कारण मरा हुआ है, पर आत्मा धार्मिकता के कारण जीवन है। रोमियों 8:1-10.

आत्मा के अनुसार होना जीवन है, और शरीर के अनुसार होना मृत्यु है। शरीर, जो निम्नतर स्वभाव है, हमारी भावनाओं का स्रोत है। शारीरिक निम्नतर स्वभाव पर उच्चतर स्वभाव का शासन होना चाहिए, और यह पवित्र आत्मा के अधीन होकर अपनी इच्छा-शक्ति का प्रयोग करने से होता है। हमारे उच्चतर, शारीरिक मनो को यहीं और अभी रूपांतरित किया जा सकता है, परंतु हमारे निम्नतर स्वभाव को बदले जाने के लिए द्वितीय आगमन तक प्रतीक्षा करनी होगी।

यहेज़केल की दो लकड़ियाँ एक ऐसी लकड़ी की पहचान करती हैं जिसे प्रांगण के रूप में दर्शाया गया है, और वह लकड़ी 1798 में अपने समापन पर पहुँची। उसे ठीक-ठीक बारह सौ साठ वर्षों तक पैगनवाद द्वारा समुदाय को पददलित किए जाने, और बारह सौ साठ वर्षों तक पापाई शासन द्वारा समुदाय को पददलित किए जाने से विभाजित किया गया था। वह लकड़ी परमेश्वर के पवित्रस्थान के पददलन का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी, क्योंकि परमेश्वर का पवित्रस्थान दक्षिणी राज्य में स्थित था। पैगनवाद और पापाई शासन द्वारा जो समुदाय पददलित किया गया, वह एक मानव मंदिर था, परन्तु दक्षिणी राज्य के संदर्भ में वह शरीर था, और दक्षिणी राज्य वही स्थान था जहाँ परमेश्वर ने सिर रखना चुना था। उत्तरी राज्य शरीर था, दक्षिणी राज्य सिर था।

उत्तरी राज्य के बारह सौ साठ वर्षों के दो खंड, देह-मन्दिर में पाप की दो भिन्न प्रवृत्तियों—जन्मजात और अर्जित—का प्रतिनिधित्व करते थे। पैगनवाद देह-मन्दिर में पाप की जन्मजात प्रवृत्तियों का प्रतीक था, और पापसी द्वारा पैगनवाद के धर्म को अपनाया जाना, पाप की अर्जित प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों ही दशाओं में, देह-मन्दिर का रूपान्तरण द्वितीय आगमन तक सम्भव न था; अतः उत्तरी राज्य की छड़ी का विस्तार केवल 1798 तक ही रहा, और जब यूहन्ना को मन्दिर का माप लेने की आज्ञा दी गई, तब उस छड़ी को सम्मिलित न करना था।

"परिवर्तन" शब्द का अर्थ एक अवस्था या दशा से दूसरी में रूपांतरण या बदलाव होता है। जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो वे अपनी मूल अवस्था से "परिवर्तित" हो गए, क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में परिपूर्ण रचे गए थे, जहाँ उच्चतर शक्तियाँ निम्नतर शक्तियों पर नियंत्रण रखती थीं। जब उन्होंने पाप किया, तो वे ऐसे अस्तित्व में "परिवर्तित" हो गए, जिसमें निम्नतर शक्तियों ने उच्चतर शक्तियों पर प्राधान्य प्राप्त कर लिया। उन्होंने वह अवस्था अपने सभी वंशजों को हस्तांतरित कर दी।

यहेज़केल की दो लकड़ियों से संबंधित भविष्यवाणी में, प्रभु ने यरूशलेम को प्रधान, अर्थात् वह राजधानी जहाँ राजा निवास करता था, के रूप में चुना। उसे उच्चतर सत्ता होना था। दो लकड़ियों के रूपक में, उत्तर के उच्चतर राज्य के संबंध में दक्षिणी राज्य निम्न सत्ता था। जब दो लकड़ियों को जोड़ा जाना था, तब जो परिवर्तन दर्शाया गया, वह यह अपेक्षा करता था कि दक्षिणी राज्य को उसके प्रधान पद पर लौटा दिया जाए। उसे उत्तरी राज्य की ओर परिवर्तित होना था, क्योंकि तब वह उत्तर के सच्चे राजा के साथ संयुक्त होता और सच्चे उत्तरी राज्य के सिंहासन-कक्ष से जुड़ जाता।

इसी कारण, उत्तरी राज्य केवल 1798 तक ही पहुँचा, और यूहन्ना से प्रांगण को छोड़ देने को कहा गया, जो केवल 1798 तक ही पहुँचता था। तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर दक्षिणी राज्य तेईस सौ वर्षों की लाठी से जुड़ जाएगा, परन्तु उत्तरी राज्य का अंत तब हो जाएगा जब दैविकता और मानवता का संयोग उस मंदिर के उन दो कक्षों के भीतर

संपन्न हो चुका होगा, जिन्हें यूहन्ना ने तब नापा था। तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर उत्तरी राज्य छियालिस की कड़ी द्वारा दक्षिणी राज्य से जुड़ा था, परन्तु वह 1844 से सीधे नहीं जुड़ा, जैसा कि दक्षिणी राज्य जुड़ा था।

दक्षिणी राज्य का संबंध छियालीस वर्षों के मन्दिर से भी, और दो सौ बीस वर्षों द्वारा निरूपित दिव्यता तथा मनुष्यता के संयोजन से भी था। 1798 में उत्तरी राज्य ने छियालीस वर्षों के मन्दिर की नींव को चिह्नित किया, परन्तु वहीं उसका अंत हो गया; क्योंकि, नींव होने के नाते, वह उस देह का प्रतिनिधित्व करता था जिसे मसीह ने अपने ऊपर धारण की थी, और उनकी देह तो जगत की स्थापना से ही वध की गई थी। सभी मन्दिर परस्पर विनिमय प्रतीक हैं; और 1798 में उन छियालीस वर्षों की वह नींव उनकी मानवीय देह को निरूपित करती है, तथा 1844 में उन छियालीस वर्षों की समाप्ति उनकी दिव्यता को निरूपित करती है।

1798 तक जो जनसमूह रौंदा गया था, वह परमेश्वर का पवित्रस्थान नहीं था; यद्यपि उस अवधि में परमेश्वर के पवित्रस्थान को रौंदा जाता हुआ प्रस्तुत किया गया था, पर वह रौंदना दक्षिणी राज्य में हो रहा था, जहाँ परमेश्वर ने यरूशलेम को चुना था, अपना पवित्रस्थान और अपना नाम रखने के लिए। जो जनसमूह रौंदा गया था, वह अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करता था; वह देह का प्रतिनिधित्व करता था।

जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तब पाप द्वारा मानवता को रौंदे जाने के सात हज़ार वर्षों के "सात काल" शुरू हुए। उसी समय, उस मेमने ने, जो जगत की स्थापना से वध किया गया था, मानवता की पापमय गनगता को ढकने के लिए मेमनों की खालें प्रदान कीं। जब 1798 में मानवता का रौंदा जाना समाप्त हुआ, तो वह मेमना, जो मंदिर के प्रत्येक पवित्रीकृत प्रतिरूप का आधार और निर्माता है, फिर से वध किया गया। वहीं उत्तरी राज्य, और उसमें दर्शाया गया मानव मंदिर, समाप्त हो गया।

1798 वह समय था जब छद्म मसीह-विरोधी का वध कर दिया गया, साढ़े तीन भविष्यसूचक वर्षों तक अपनी शैतानी गवाही देने के बाद; यह अवधि 538 ईस्वी में उसकी सत्ता-प्राप्ति से आरम्भ हुई थी, जिसके पहले 508 ईस्वी से शुरू होने वाली तीस वर्षों की तैयारी हुई थी। वह मसीह की उन तीस वर्षों की तैयारी की शैतानी नक़ल थी जो उनके जन्म से आरम्भ हुई, जो उनके सशक्तिकरण पर, जब उन्हें बपतिस्मा दिया गया, समाप्त हुई; और उसके बाद उन्होंने साढ़े तीन वास्तविक वर्षों तक अपनी गवाही दी, जब तक कि वे उस बिंदु तक न पहुँचे जहाँ जगत की स्थापना से वध किया गया मेम्ना क्रूस पर चढ़ाया गया। तब उनकी वह प्रतिज्ञा पूरी हुई कि जब मंदिर नष्ट हो जाएगा, तो वह उसे तीन दिनों में फिर से खड़ा करेंगे।

वही था जिसने अपने शरीर के मंदिर को उठाया, क्योंकि पुनरुत्थान उसकी दिव्यता की शक्ति से ही सम्पन्न हुआ था; क्योंकि क्रूस पर उसकी दिव्यता नहीं मरी थी, क्रूस पर उसकी मानवीय प्रकृति ही मरी थी, क्योंकि परमेश्वर का मरना असंभव है।

'मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ' (यूहन्ना 11:25)। जिसने कहा था, 'मैं अपना जीवन देता हूँ, ताकि उसे फिर से ले लूँ' (यूहन्ना 10:17), वही कब्र से निकल आया—उस जीवन के द्वारा जो स्वयं उसमें था। उसकी मानवता मर गई; उसका देवत्व नहीं मरा। अपने देवत्व में, मसीह के पास मृत्यु के बंधनों को तोड़ने की शक्ति थी। वह घोषित करता है कि उसके भीतर स्वयं जीवन है, ताकि वह जिसे चाहे जीवन दे सके। चुने हुए संदेश, पुस्तक 1, 301.

1798 में, 'उत्तरी राज्य' की सेना कहलाने वाला मानव मंदिर अपने समापन पर पहुँचा, क्योंकि निम्न प्रकृति के प्रतीक के रूप में वह दूसरे आगमन पर होने वाले पुनरुत्थान तक बदला नहीं जा सकता था। फिर भी, उसने उन छियालीस वर्षों की नींव की पहचान कर दी जब मसीह ने उस मंदिर को उठाया जिसे परिवर्तित किया जा सकता था, जिसका प्रतिनिधित्व दक्षिणी राज्य द्वारा किया गया था, जो मन की उच्च शक्तियों का प्रतीक था, और जो उस क्षण परिवर्तित हो जाती हैं जब किसी पापी को धर्मी ठहराया जाता है।

जिस नींव को स्वयं मसीह ने डाला था, उस पर प्रेरितों ने परमेश्वर की कलीसिया का निर्माण किया। पवित्र शास्त्रों में कलीसिया के निर्माण को समझाने के लिए अक्सर मंदिर निर्माण का उदाहरण दिया गया है। जकर्याह मसीह

को उस 'शाखा' के रूप में बताता है जो प्रभु के मंदिर का निर्माण करेगी। वह अन्यजातियों के इस काम में सहायता करने की भी बात करता है: 'जो दूर हैं वे आकर प्रभु के मंदिर का निर्माण करेंगे;' और यशायाह कहता है, 'परदेशियों के पुत्र तेरी दीवारों का निर्माण करेंगे।' जकर्याह 6:12, 15; यशायाह 60:10.

इस मंदिर के निर्माण के विषय में लिखते हुए, पतरस कहता है, 'जिसके पास आकर, जो मनुष्यों से तो अस्वीकृत, परन्तु परमेश्वर के द्वारा चुना हुआ और बहुमूल्य जीवित पत्थर है, तुम भी, जीवित पत्थरों के समान, आत्मिक घर के रूप में बनाए जा रहे हो, एक पवित्र याजकाई, ताकि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को स्वीकार्य आत्मिक बलिदान चढ़ाओ।' 1 पतरस 2:4, 5.

यहूदी और अन्यजाति जगत की खदान में प्रेरितों ने परिश्रम किया, नींव पर रखने के लिए पत्थर निकालते हुए। इफिसुस के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में पौलुस ने कहा, 'अतः अब तुम परदेसी और बाहरी नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के साथ सहनागरिक हो, और परमेश्वर के घराने के सदस्य हो; और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनाए गए हो, जिसका मुख्य कोने का पत्थर स्वयं यीशु मसीह है; उसी में सारी इमारत एक साथ अच्छी रीति से जुड़कर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है; और उसी में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए साथ-साथ बनाए जा रहे हो।' इफिसियों 2:19-22.

"और कुरिन्थियों को उसने लिखा: 'जो परमेश्वर का अनुग्रह मुझे दिया गया है, उसके अनुसार मैंने एक बुद्धिमान प्रधान राजमिस्त्री के समान नींव डाली है, और कोई दूसरा उस पर निर्माण कर रहा है। परन्तु हर एक सावधान रहे कि वह उस पर कैसे निर्माण करता है। क्योंकि जो नींव डाली जा चुकी है, अर्थात् यीशु मसीह, उसके सिवाय कोई दूसरी नींव नहीं रख सकता। अब यदि कोई इस नींव पर सोना, चाँदी, रत्न, लकड़ी, घास, पराली से निर्माण करे; तो हर एक का काम प्रकट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन इसे प्रकट कर देगा, क्योंकि वह आग के द्वारा प्रकट होगा; और आग हर एक के काम को परखेगी कि वह कैसा है।' 1 कुरिन्थियों 3:10-13."

प्रेरितों ने एक सुनिश्चित नींव पर निर्माण किया, अर्थात् युगों की चट्टान पर। इसी नींव पर वे वे पत्थर लाए जो उन्होंने संसार से निकालकर तराशे थे। निर्माताओं का श्रम बाधाओं से रहित नहीं था। मसीह के शत्रुओं के विरोध ने उनके कार्य को अत्यंत कठिन बना दिया। उन्हें उन लोगों की कट्टरता, पूर्वाग्रह और घृणा के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ा जो एक झूठी नींव पर निर्माण कर रहे थे। कलीसिया के निर्माताओं के रूप में काम करने वाले बहुतों की तुलना नहेमायाह के दिनों के दीवार-निर्माताओं से की जा सकती है, जिनके विषय में लिखा है: 'जो दीवार बनाते थे, और जो बोज़ उठाते थे, और जो लादते थे—हर एक व्यक्ति एक हाथ से काम करता था और दूसरे हाथ में हथियार पकड़े रहता था।' नहेमायाह 4:17। प्रेरितों के काम, 595, 596.

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

मनुष्य के पतन ने पूरे स्वर्ग को शोक से भर दिया। वह संसार जिसे परमेश्वर ने बनाया था, पाप के श्राप से ग्रस्त हो गया था और ऐसे प्राणियों से आबाद था जो दुख और मृत्यु के लिए अभिशप्त थे। जिन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया था उनके लिए मुक्ति का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता था। स्वर्गदूतों ने स्तुति के गीत गाना बंद कर दिया। स्वर्गीय प्रांगणों में हर ओर उस विनाश पर शोक था जो पाप ने किया था।

परमेश्वर के पुत्र, स्वर्ग के महिमामय सेनानायक, पतित मानव जाति के प्रति दया से भर गए। खोई हुई दुनिया के दुःख जब उनके सामने उठ खड़े हुए, तो उनका हृदय असीम करुणा से पिघल गया। परन्तु दिव्य प्रेम ने एक ऐसा उपाय ठहराया था जिसके द्वारा मनुष्य का उद्धार हो सकता था। परमेश्वर की भंग हुई व्यवस्था पापी के जीवन की मांग करती थी। समस्त ब्रह्मांड में केवल एक ही था जो मनुष्य के पक्ष में उसके दावों को संतुष्ट कर सकता था। क्योंकि दिव्य व्यवस्था स्वयं परमेश्वर के समान पवित्र है, इसलिए केवल वही जो परमेश्वर के तुल्य हो, उसके उल्लंघन का प्रायश्चित्त कर सकता था। मसीह को छोड़ कोई भी पतित मनुष्य को व्यवस्था के शाप से छुड़ाकर उसे फिर से स्वर्ग की संगति में नहीं ला सकता था। मसीह अपने ऊपर पाप का दोष और लज्जा ले लेते—ऐसा पाप जो पवित्र परमेश्वर के लिए इतना आपत्तिजनक है कि वह पिता और पुत्र के बीच भी अलगाव उत्पन्न कर दे। मसीह नष्टप्राय जाति को बचाने के लिए दुःख की गहराइयों तक उतर जाते।

पिता के समक्ष वह पापी की ओर से निवेदन कर रहा था, जबकि स्वर्ग की सेनाएँ ऐसी तीव्र उत्सुकता के साथ परिणाम की प्रतीक्षा कर रही थीं जिसे शब्द व्यक्त नहीं कर सकते। मनुष्यों के पतित पुत्रों के लिए वह रहस्यमय संवाद—'शान्ति का परामर्श' (जकरयाह 6:13)—लम्बे समय तक चलता रहा। उद्धार की योजना पृथ्वी की सृष्टि से पहले ही बनाई गई थी; क्योंकि मसीह 'जगत की उत्पत्ति से ही वध किया हुआ मेमेंना' है (प्रकाशितवाक्य 13:8); तौभी समस्त ब्रह्माण्ड के राजा के लिए भी अपराधी मानव जाति के लिए अपने पुत्र को मृत्यु के लिए सौंप देना एक संघर्ष था। परन्तु 'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।' यूहन्ना 3:16. ओह, उद्धार का रहस्य! उस जगत के प्रति परमेश्वर का प्रेम जो उससे प्रेम नहीं करता था! उस प्रेम की गहराइयों को कौन जान सकता है जो 'ज्ञान से बढ़कर' है? अनन्त युगों तक अमर बुद्धियाँ उस अगम्य प्रेम के रहस्य को समझने का प्रयास करती हुई विस्मित होंगी और आराधना करेंगी।

"परमेश्वर मसीह में प्रकट होना था, 'जगत को अपने साथ मेल कराता हुआ।' 2 कुरिन्थियों 5:19। मनुष्य पाप से इतना अधःपतित हो गया था कि स्वयं अपने बल पर उसके लिए उस परमेश्वर के साथ, जिसका स्वभाव पवित्रता और भलाई है, सामंजस्य में आना असंभव था। परन्तु मसीह ने जब व्यवस्था के दण्डादेश से मनुष्य को छुड़ा लिया, तब वह ऐसी दिव्य शक्ति प्रदान कर सकता था जो मानवीय प्रयास के साथ संयुक्त हो सके। इस प्रकार परमेश्वर की ओर पश्चाताप और मसीह पर विश्वास के द्वारा, आदम की गिरी हुई संतान फिर से 'परमेश्वर की सन्तान' बन सकती है। 1 यूहन्ना 3:2।" पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता, 63, 64.